शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ५० : नई दिल्ली : १८-२४ मार्च २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी जसोल की ओर विहार करते हुए जाणुन्दा पधार गए हैं। २३-२५ मार्च को सिरियारी, २७ मार्च को कंटालिया, ३० मार्च को बगड़ी तथा ४ अप्रेल को पाली पधार जाएंगे। पाली में महावीर जयंती का आयोजन होगा।

ije J); vkpk;ioj tlky dh vkj

thou dh ,d cMh miyfCèk g vu'ku

† ekpA परम पावन आचार्यप्रवर ने आज प्रातः नाडोल की ओर विहार किया। मार्गवर्ती वरकाणा ढाणी में माली और मीणा परिवार के घर पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बने। अनेक ग्रामीणों ने आचार्यवर की प्रेरणा से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। पिंगरला के ग्रामीणों को भी पूज्यप्रवर से पावन प्रेरणा प्राप्त हुई। नाडोल के निकट स्थित श्री मानदेवसूरी जैन गोशाला में भी पूज्यवर का पदार्पण हुआ। गोशाला समिति के अध्यक्ष श्री सुकनराज मरलेचा, श्री बालचन्द कोठारी आदि कार्यकर्ताओं ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए गोशाला के विषय में अवगति दी। आचार्यप्रवर ने कार्यकर्ताओं को अनावश्यक हिंसा से उपरत होने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्य आचार्यप्रवर १०.०३ किमी. का विहार कर नाडोल पधारे। यहां आपका प्रवास श्री रूपमुनि सार्वजनिक धर्मशाला में हुआ।

प्रातःकालीन प्रवचन में परमपूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जीवन जीना सामान्य बात होती है। किन्तु धार्मिक-आध्यात्मिक जीवन जीना आत्मा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बात होती है। यों तो जीवन हर प्राणी जीता है, किन्तु मानव के पास विशेष चिंतनशक्ति होती है। इसलिए वह विशेष जीवन जी सकता है। मनुष्य में बुद्धि होती है। उसके द्वारा अच्छे और बुरे दोनों तरह के कार्य किए जा सकते हैं। किन्तु दोनों तरह के कार्यों का मूल कारण मोहनीय कर्म होता है। मोहनीय कर्म प्रबल होता है तो बुद्धि बुरे कार्यों में प्रवृत्त हो जाती है और यदि वह उपशान्त होता है तो बुद्धि सत्कार्यों में लगती है, मन, वचन और काया की प्रवृत्ति निर्मल रहती है। मोहनीय कर्म के क्षयोपशम के द्वारा अपनी बुद्धि को पवित्र बनाएं और उसका अच्छे कार्यों में प्रयोग करें।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'जीवन एक कला है तो मरना भी कला है। जब मृत्यु सन्निकट जान पड़े तो संलेखना-संथारा की ओर आगे बढ़ना चाहिए। यह समाधिमरण अथवा मरने की कला है। अन्तिम श्वास अस्पताल और असमाधि में जाना मजबूरी होती है। धार्मिक वातावरण में आराध्य का स्मरण करते-करते आत्मस्थ अवस्था में प्राण त्यागना विशेष बात होती है। एक अवस्था आने के बाद मृत्यु की तैयारी करनी चाहिए, संलेखना-संथारे का चिंतन करना चाहिए। अनशन स्वीकार करना और उसे उज्ज्वल परिणामधारा में पार लगा देना जीवन की एक बड़ी उपलब्धि होती है। अनशन का स्वीकरण मृत्यु का स्वागत करना है। वह एक शौर्य और प्रबल आध्यात्मिक बल की बात होती है। अनशन में जीने की कामना और मरने की भावना दोनों न रहे, बल्कि समताभाव रहे। आवेश में आकर जीवन का परित्याग करना एक बात होती है और शान्तभाव से आत्मकल्याण के लिए अनशन का स्वीकरण महत्त्वपूर्ण बात होती है। साधु और श्रावक के लिए तो अनशन एक मनोरथ है। पारिवारिकजन अपने स्वजन को अन्तिम समय में यथासंभव धार्मिक सहयोग दें, ताकि परिणामधारा धर्ममय बन सके।'

आचार्यवर के प्रवचन के उपरान्त श्री कानितलाल जैन ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। बालोतरा से समागत तेरापंथ युवक परिषद् के सदस्यों ने गीत के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। यहां के कतिपय मूर्तिपूजक परिवारों के घर सायंकाल पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बने।

vkRel[k d fy, dj lk/kuk

‡ ekpA परम श्रद्धेय आचार्यवर ने आज प्रातः नाडोल से नीपल की ओर विहार किया। लोगों की प्रार्थना पर आचार्यवर नाडोल ग्राम के बाहर स्थित आशापुरा देवी के मन्दिर में भी पधारे। मध्यवर्ती केसरसिंह का गुड़ा में ग्रामीणों को परमपूज्यश्री का पावन पाथेय प्राप्त हुआ। अनेक लोगों ने आचार्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। आचार्यवर ने नीपल गांव के बाहर स्थित माधवानन्द आश्रम का भी अवलोकन किया।

नौ किमी. का विहार कर आचार्यवर नीपलखुर्द पधारे। आचार्यवर के पदार्पण से जैन समाज में उल्लास का वातावरण था। मुम्बई, बेंगलुरु, बडोदरा आदि क्षेत्रों में प्रवास करने वाले यहां के मूर्तिपूजक समाज के लोग इस अवसर पर बड़ी संख्या में अपने गांव पहुंचे और अपने घर खोल कर आचार्यवर के दर्शन और उपासना का लाभ लिया। आचार्यवर ने प्रवास स्थल पर पधारने से पूर्व अनेक जैन घरों का स्पर्श किया। आज का प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आत्मा और शरीर, इन दोनों के योग से जीवन निष्पन्न होता है। जहां केवल आत्मा अथवा केवल शरीर होता है, वहां जीवन नहीं होता। इन दोनों तत्त्वों का पृथक्-पृथक् हो जाना ही मृत्यु है और इनका हमेशा के लिए विच्छेद होना मोक्ष है। व्यक्ति शरीर पर ध्यान देता है। उसके लिए भोजन आदि करता है और वह शरीर के लिए आवश्यक भी होता है। उसके बिना लंबे समय तक जीवन नहीं चल सकता। इसी प्रकार आत्मा के लिए धर्म की साधना आवश्यक होती है। धर्माराधना मानों आत्मा का भोजन होता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'धर्म के दो प्रकार हैं--उपासनात्मक और आचरणात्मक। सामायिक, जप आदि उपासनात्मक धर्म और अहिंसा, नैतिकता आदि आचरणात्मक धर्म के अन्तर्गत आते हैं। उपासनात्मक धर्म भी अच्छा है, किन्तु उसके साथ आचरणात्मक धर्म के प्रति भी आस्था रखें। हिंसा, झूठ, धोखाधड़ी आदि से यथासंभव बचने का प्रयास करें। भोग और भौतिकता का जीवन अलग होता है और आत्मा का सुख अलग होता है। राग-द्वेष उपशान्त और विनष्ट होंगे तो पदार्थों से आसक्ति हटेगी और आत्मसुख की प्राप्ति होगी। ऐसा सुख देवलोक में इन्द्र को भी प्राप्त नहीं होता। आत्मसुख की प्राप्ति के लिए साधना का अभ्यास करें।'

आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व श्री पोमालाल चौधरी ने पूज्यवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति की। पूज्यवर की प्रेरणा से कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

Mk;yuk e ikou inki.k

^ ekpA परम श्रद्धेय आचार्यवर ने आज प्रातः नीपलखुर्द से डायलाना के लिए प्रस्थान किया। मध्यवर्ती केसूली गांव के एक जैन परिवार का घर पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बना। पूज्यप्रवर जिस सड़क मार्ग पर गतिमान थे, वह मार्ग क्षतिग्रस्त था। यह पथरीला और जगह-जगह गड्ढों के रूप में परिवर्तित हो चुका पथ पूज्यचरणों को रोक पाने में असमर्थ था। लगभग ७.०७ किमी. का विहार कर आचार्यवर डायलाना पधारे। पूज्यचरणों के स्पर्श से अपने गांव को पावन बना देखकर यहां का मूर्तिपूजक समाज हर्षविभोर था। मुम्बई, बेंगलुरु, चेन्नई आदि विभिन्न क्षेत्रों में रहनेवाले लोग बड़ी संख्या में अपने पैतृक गांव में पहुंचे। वैसे तो जैन समाज के प्रायः इस गांव में आठ घर खुले रहते हैं, किन्तु पूज्यवर के आगमन पर आज लगभग

चालीस घर खुल गए। आचार्यवर का प्रवास श्री विनोदकुमार नेमीचन्द श्रीश्रीमाल परिवार के निवास पर हुआ।

श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक आराधना भवन में समायोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व श्री महावीर लोढ़ा ने संपूर्ण मूर्तिपूजक समाज की ओर से आस्थासिक्त स्वरों में पूज्य आचार्यवर का स्वागत एवं अभिनंदन किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आज परमपूज्य आचार्यवर का डायलाना में पदार्पण हुआ है, इस कारण लोगों में अतिशय उल्लास है। ऐसा लगता है कि सारा हर्ष और सारी प्रसन्नता केन्द्रीभूत होकर आज यहां साकार हो रही है। मैं आशा करती हूं कि पूज्य आचार्यवर का यह एकदिवसीय प्रवास लोगों को जीने का नया रास्ता दिखाएगा। यदि आप लोग आचार्यवर के उपदेशों को जीवन में आत्मसात् करें तो आपके जीवन में महावीर का अवतरण हो सकेगा।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में हाजरी का वाचन किया। पूज्यप्रवर का मंगल उद्बोधन पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित हो चुका है। हाजरी वाचन के पश्चात् मुनि मृदुकुमारजी एवं मुनि शुभंकरजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया, तत्पश्चात् साधु-साध्वियों ने खड़े होकर सामूहिक रूप से लेखपत्र का उच्चारण किया। सायंकाल आहार के पश्चात् आचार्यप्रवर सभी जैन घरों में पधारे।

gkyh ij vkè;kfRed jxk e ljkckj exjryko

% ekpA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः डायलाना से मगरतलाव की दिशा में प्रस्थित हुए। मार्गस्थ देवड़ों का गुड़ा में ग्रामीणों को आचार्यवर का पावन संबोध प्राप्त हुआ। अनेक लोगों ने आचार्यवर की प्रेरणा से नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया। लगभग नौ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर द्विदिवसीय प्रवास हेतु मगरतलाव पधारे। होली के अवसर पर अपने गांव में अपने आराध्य का स्वागत कर यहां के तीन श्रद्धा के परिवार अत्यन्त पुलकित, प्रमुदित और प्रफुल्लित थे। अन्य जैन समाज में भी प्रसन्नता का वातावरण था। पूरा गांव आध्यात्मिक रंग में सराबोर था। राजकीय आदर्श उच्च प्राथमिक विद्यालय में पूज्यवर का द्विदिवसीय प्रवास हुआ।

आज मंत्रीमुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' लगभग तीन सप्ताह तक पृथक प्रवास के बाद पुनः गुरुकुलवास में पहुंचे। पूज्य आचार्यप्रवर ने लगभग एक किमी. आगे पधार कर अपने दीक्षा प्रदाता की अगवानी की। साध्वीप्रमुखाजी भी आचार्यवर के साथ अगवानी में पधारीं। ज्ञातव्य है--पूज्यप्रवर की सेराप्रान्त की यात्रा से पूर्व मंत्री मुनिश्री चारभुजा रुक गए थे।

आज का प्रातःकालीन कार्यक्रम कांठास्तरीय स्वागत समारोह के रूप में आयोजित था। कार्यक्रम के प्रारंभ में परमार परिवार की महिलाओं द्वारा स्वागत गीत का संगान किया गया। श्री पुखराज परमार ने पूज्यचरणों में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए परिग्रह के सीमाकरण का संकल्प व्यक्त किया। स्थानीय विधायक श्री केसाराम चौधरी, पाली जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष श्री भूपेन्द्रसिंह और जिला शिक्षाधिकारी श्रीमती नूतनबाला कपिला ने कांठा क्षेत्र में आचार्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया। पाली जिलाप्रमुख और राजस्थान जिलाप्रमुख संघ के अध्यक्ष श्री खुशवीरसिंह ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए गुरुदेव तुलसी की प्रेरणा से अपने जीवन में आए परिवर्तन की अवगति दी। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ।

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'आज होली का लौकिक पर्व मगरतलाववासियों को लोकोत्तर आह्लाद देने वाला बन रहा है। हम लोग भी बाईस दिनों के पृथक् प्रवास के बाद आज आचार्यवर की सन्निधि में पहुंचे हैं। इन बाईस दिनों में आचार्यवर का विहार प्रतिदिन होता रहा। जनकल्याण के लिए आचार्यप्रवर अतिशय श्रम कर रहे हैं। मुझे परम प्रसन्नता हो रही है कि आज मैं आचार्यश्री की मंगल

सन्निधि में आ गया। होली का यह त्योहार लोगों को आध्यात्मिक आनंद में सराबोर करनेवाला बने।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हर व्यक्ति को अपने जीवन में यदा-कदा चिंतन करते रहना चाहिए और पवित्र चिंतन करते-करते परिवर्तन भी घटित हो सकता है। श्रावक के लिए चिंतन के तीन बिन्दु बताए गए, जो तीन मनोरथ कहे जाते हैं। उनमें पहला है--मैं अपने जीवन में परिग्रह का प्रत्याख्यान कब करूंगा? गृहस्थ जीवन में परिग्रह रहता है और जीवनयापन के लिए धन आवश्यक भी होता है। धन के संदर्भ में कई समस्याएं भी हो सकती हैं। अर्थ के लिए कई बार व्यक्ति कितने गलत कार्य कर लेता है। अर्थार्जन और उसके संरक्षण में समस्या हो सकती है। जैन श्रावकों के लिए निर्दिष्ट बारहव्रतों में पांचवां व्रत है--इच्छापरिमाणव्रत। जीवन की आवश्यकतापूर्ति के लिए गृहस्थ को धन की जरूरत पड़ती है, किन्तु उसकी इच्छाएं असीमित न हों। आत्मकल्याण के लिए अर्थ और धन का सीमाकरण करें। धनवान लोगों के लिए मेरे तीन परामर्श हैं--

१. धन का अहंकार मत करो।

२. धन के प्रति ज्यादा आसक्ति मत करो।

३. धन का दुरुपयोग मत करो।

जिनके पास धन है, उन्हें संयम की चेतना का विकास करना चाहिए।' पूज्यवर ने अपने प्रवचन में श्रावक के अन्य दो मनोरथों के विषय में भी प्रेरणा प्रदान की।

होली के त्यौहार पर जनता को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'आज होली का त्यौहार है। भारतीय लोक परंपरा में यह एक प्रसिद्ध त्यौहार है। लोगों में इसके प्रति आकर्षण का भाव भी है। लेकिन इसका विकृत रूप चिंतनीय है। व्यक्ति इस त्यौहार पर यह चिंतन करे कि जैसे होलिका दहन किया जाता है, वैसे ही मैं अपने दुर्गुणों का दहन करूं। यदि एक-एक दुर्गुण को प्रतिवर्ष छोड़ा जाए तो एक दिन जीवन दुर्गुणमुक्त बन सकता है। होली रंगों का त्यौहार है। यह एक उल्लास का पर्व होता है। यह उल्लास अध्यात्म के साथ जुड़ जाए तो होली का अधिक महत्त्व हो सकता है और आत्मा उत्थान को भी प्राप्त हो सकती है।'

मगरतलाव समागमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आज हम मगरतलाव आए हैं और मैं तो ऐसा मानता हूं कि मूल कांठा क्षेत्र में आ गए हैं। हमारे लिए यह भी सात्विक संतोष की बात है कि आज श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री भी पधार गए। इतने दिन क्षेत्रीय दूरी थी, आज वह दूरी समाप्त हो गई। आपका अपना माहात्म्य, साधना और वैदुष्य है। मगरतलाव का परमार परिवार काफी श्रद्धालु परिवार है और पुखराजजी परमार तो हमारे साथ सेवा में रहते हैं। अवस्था काफी हो गई, फिर भी रास्ते की सेवा बहुत भावना के साथ करते हैं। इस बार थोड़ी-थोड़ी कांठा की व्यवस्था में भी घूमने लग गए। एक अच्छे श्रद्धालु श्रावक हैं। इनके अनुज महासभा के उपाध्यक्ष हैं। मुझे सात्विक आह्लाद और प्रसन्नता है कि पुखराजजी परमार के गांव में आया हूं।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

Jo.k l fIf)

Š ekpA मगरतलाव प्रवास का दूसरा दिन। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आज प्रातः सभी जैन घरों का स्पर्श किया। इस दौरान अनेक जैनेतर समाज के घरों में भी पूज्यवर का पावन पदार्पण हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'भारतीय साहित्य और संस्कृति में सत्संग का बहुत महत्त्व बताया गया है। अच्छी संगत में रहना विकास का कारण बनता है और साधुओं की संगति से ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। सद्गुरु की उपासना भी अच्छी होती है। वे न बोलें तो उनका मौन भी कुछ न कुछ देने वाला हो सकता है। उन्हें देखने से भी प्रेरणा मिल सकती है। गुरुवचन को जागरूकता के साथ सुनना चाहिए। श्रवण से ज्ञान की प्राप्ति और तत्पश्चात् विज्ञान,

प्रत्याख्यान आदि हो सकते हैं। प्रत्याख्यान से आचार का नैर्मल्य बढ़ता है और इस दिशा में विकास करते-करते सिद्धि की प्राप्ति हो जाती है। इसलिए गुरु के उपदेश को दत्तचित्त होकर सुनें और उसे आत्मसात् करने का प्रयास करें।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर के प्रवचन के पश्चात् कांठास्तरीय स्वागत समारोह का अवशिष्ट क्रम रहा। श्री घीसूलाल नाहर, श्री मांगीलाल छाजेड़, श्री ललित कांकलिया, श्री अविनाश नाहर, श्री तेजराज पुनमिया, श्री गौतम डागा, श्री लूणकरण सुराणा, श्री मूलचन्द नाहर, श्री दीपचन्द नाहर, श्री मदनचन्द गादिया, श्री फूलचन्द तातेड़, श्री विजयराज सोलंकी आदि ने अपनी मातृभूमि पर अपने आराध्य की अभ्यर्थना में अपने श्रद्धासिक्त भावों को अभिव्यक्ति दी। मगरतलाव के मूर्तिपूजक समाज की ओर से श्री सुकनराज परमार ने आचार्यवर का स्वागत किया।

परमाराध्य आचार्यवर ने स्वागत समारोह के संदर्भ में कहा--'कांठास्तरीय स्वागत समारोह चला। कांठा में तो कुछ अंशों में दक्षिण भारत को देखा जा सकता है। यहां के अधिकांश श्रावक दक्षिण के चेन्नई, बेंगलुरु आदि क्षेत्रों में प्रवास करते हैं। अभी समय कम है। इतने कम समय में सभी क्षेत्रों का स्पर्श कठिन है। किन्तु जितना भी समय है, श्रावक समाज उसका अच्छा उपयोग करे।'

कार्यक्रम में मूर्तिपूजक समाज के आचार्य हिमाचलसूरिजी की शिष्याएं साध्वी वल्लभश्रीजी आदि पांच साध्वियां उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के उपरान्त वे पूज्यवर की सन्निधि में पहुंचीं और आचार्यवर से उनका संक्षिप्त वार्तालाप हुआ।

vkpk; egkJe.k ver egksRlo ij vk'kHkk"k.k ifr;kfxrk

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में साहित्य समिति द्वारा साधु-साध्वियों और समणश्रेणी के लिए समायोजित होने वाली प्रतियोगिताओं के क्रम में आज ८वीं प्रतियोगिता आशुभाषण प्रतियोगिता के रूप में आयोजित हुई। इस प्रतियोगिता में ११ प्रतियोगी संभागी बने। मुनि उदितकुमारजी एवं मुनि दिनेशकुमारजी ने निर्णायक का दायित्व निभाया।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित की जाने वाली इन प्रतियोगिताओं की श्लाघा करते हुए साधु-साध्वियों और समणश्रेणी को और अधिक विकास करने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यवर ने इस प्रतियोगिता के संभागी बाल मुनि मृदुकुमारजी, मुनि गौरवकुमारजी, मुनि शुभंकरजी और साध्वी कार्तिकयशाजी के प्रयास को सराहनीय बताते हुए कहा--'इतने छोटे-छोटे साधुओं और साध्वी ने अच्छा प्रयास किया है। मैं तो इनके प्रयत्न को ही महत्त्वपूर्ण मानता हूं। प्रतियोगिता में अन्य व्यक्ति प्रथम आए हैं, किन्तु उनसे पहले मैं तो इन्हें प्रथम मानते हुए इन्हें बत्तीस-बत्तीस कल्याणक बक्सीस करता हूं।' पूज्यवर के वात्सल्यपूर्ण वचन बाल साधु-साध्वी के उत्साहवर्द्धन के साथ उपस्थित जनसमूह को भी अभिभूत करनेवाले थे। प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहे--

	ofj"B ox	dfu"B ox
iFke	मुनि कुमारश्रमण	मुनि मननकुमार
f}rh;	समणी निर्मलप्रज्ञा	समणी सौम्यप्रज्ञा
rrh;	-----	मुनि अनंतकुमार, साध्वी स्वस्तिकप्रभा

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले साधुओं और साध्वी को क्रमशः इकतीस, इक्कीस और ग्यारह तथा शेष को नौ कल्याणक बक्शीश किए। प्रतियोगिता का संचालन मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने किया।

,d ifjokj % nxuk fogkj

« ekpA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का आज का प्रवास मगरतलाव से लगभग सात किमी. की दूरी पर स्थित पनोता में निर्धारित था। किन्तु 'कोट सोलंकियान' नामक पार्श्ववर्ती गांव के एक तेरापंथी परिवार की भावना पर भक्तवत्सल आचार्यवर ने दुगुना विहार किया। पूज्यप्रवर प्रातः मगरतलाव से कोट की ओर प्रस्थित हुए। मार्गवर्ती कोलर और नयागांव के ग्रामीणों को परमपूज्यप्रवर से पावन पाथेय प्राप्त हुआ। आचार्यवर की प्रेरणा से यहां के अनेक व्यक्ति नशामुक्त बने। अरावली पर्वतमाला की तलहटी में बसे कोट सोलंकियान गांव की सीमा पर सरपंच श्रीमती पार्वतीदेवी आदि सैकड़ों ग्रामवासियों ने आचार्यवर की भावभीनी अगवानी की। आचार्यवर ने यहां एक तेरापंथी परिवार सहित सभी जैन परिवारों के घरों को अपनी पदरज से पावन किया। इस दौरान अनेक जैनेतर घरों में भी आचार्यवर का पदार्पण हुआ। यहां आयोजित एक संक्षिप्त कार्यक्रम में मास्टर मदनलालजी, श्री अमृतलाल गिरिया, श्री राजेन्द्र सोनी आदि ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। पूज्यप्रवर ने जनता को अहिंसा यात्रा के उद्‌देश्यों की अवगति देते हुए अनुकंपा, नैतिकता और नशामुक्ति को आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों ने आचार्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

पूज्य आचार्यप्रवर लगभग १४ किमी. का विहार कर पनोता पधारे। पूज्यवर के पदार्पण से यहां के एक तेरापंथी परिवार सहित संपूर्ण जैन समाज में उत्सव का-सा वातावरण था। मारवाड़ी साफा बांधे श्रद्धालुओं की मुखाकृति पर उनकी आन्तरिक प्रसन्नता मुखरित हो रही थी। आचार्यवर का प्रवास श्री पारसमल परमार परिवार के आवास पर रहा। अपने आराध्य का अपने आंगन में प्रवास गांव के इस एकमात्र तेरापंथी परिवार को कृतार्थता की अनुभूति कराने वाला था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्री पारसमल परमार ने अपने आराध्य की अभ्यर्थना में आस्थासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। मूर्तिपूजक समाज की ओर से श्री बाबूलाल परमार ने अपने भाव सुमन अर्पित किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दर्शन जगत् में दो विचारधाराएं हैं--आस्तिक और नास्तिक। आस्तिक दर्शन में आत्मा का शाश्वत अस्तित्व स्वीकार किया गया है। इसके विपरीत नास्तिक विचारधारा आत्मा के शाश्वत अस्तित्व, पुनर्जन्म, पूर्वजन्म आदि को नहीं मानती। शुद्ध आत्मा निरंजन और निराकार होती है। आत्मा को इन्द्रियों से ग्रहण नहीं किया जा सकता। उसके साक्षात्कार के लिए साधना की आवश्यकता होती है। साधना के द्वारा आत्मा का दर्शन किया जा सकता है।'

पूज्यप्रवर के इस एकदिवसीय प्रवास में अनेक प्रवासी मूर्तिपूजक परिवारों ने भी अपने घर खोलकर दर्शन-उपासना का लाभ लिया। सायंकालीन आहार के पश्चात् आचार्यवर उनके घरों में भी पधारे।

tktkoj e HkO; Lokxr

f, ekpA परम श्रद्धेय आचार्यवर ने आज प्रातः पनोता से जोजावर की ओर विहार किया। मार्गवर्ती गुड़ा दुर्जन के ग्रामीणों को आचार्यवर से पावन संबोध प्राप्त हुआ। जोजावर से लगभग दो किमी. पूर्व पाली जिलाप्रमुख और राजस्थान जिलाप्रमुख के अध्यक्ष श्री खुशवीरसिंहजी के भावपूर्ण अनुरोध पर आचार्यप्रवर विहार मार्ग से लगभग पौन किमी. भीतर स्थित उनके आवास पर पधारे। आचार्यवर का यहां कुछ क्षण विराजना भी हुआ। आचार्यवर के पदार्पण से भावविभोर खुशवीरसिंहजी की प्रसन्नता का कोई पार नहीं था। वे बार-बार कह रहे थे--'प्रभो ! आज आपने मुझे धन्य कर दिया।' कुल तेरह किमी. का विहार कर पूज्य आचार्यवर जोजावर पधारे। अपने गांव को आराध्य के चरणस्पर्श से पावन बना देखकर जोजावर का संपूर्ण तेरापंथ समाज प्रसन्नता के सागर में गोते लगा रहा था। अन्य जैन समाज भी पूज्यवर का स्वागत कर हर्षविभोर था। चारों ओर अलौकिक वातावरण दृष्टिगत हो रहा था। जोजावर में आचार्यवर का प्रवास

श्री कोमलचन्द किशोरकुमार भंसाली परिवार के आवास पर हुआ। भंसाली परिवार पूज्यप्रवर के इस अनुग्रह को प्राप्त कर श्रद्धाभिभूत था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का प्रेरक वक्तव्य हुआ। आचार्यवर की सन्निधि में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल और कन्यामंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। स्थानीय तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री वृद्धिचन्द सियाल, सरपंच श्री सोहनप्रकाशजी, श्री घीसूलाल गिरिया, श्री कुलदीप भंसाली आदि ने आचार्यवर की अभिवंदना में अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। श्री वृद्धिचन्द चोपड़ा ने काव्य स्वरों में पूज्यवर का अभिनंदन किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी अभिभाषण हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने संबोधि के पन्द्रहवें अध्याय में निबद्ध श्लोक का उल्लेख करते हुए कहा--'जिस दुनिया में हम जी रहे हैं, वह नित्य भी है और अनित्य भी है। लोक हमेशा था, आज भी है और आगे भी रहेगा। इस दृष्टि से यह नित्य है। किन्तु पर्याय परिवर्तन के कारण यह अनित्य भी है। इस संदर्भ में जैनदर्शन के तीन शब्द हैं--उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य। अस्तित्व की दृष्टि से आत्मा शाश्वत है, ध्रुव है। किन्तु एक आत्मा विभिन्न शरीरों को प्राप्त होती है और शरीर बचपन, यौवन, वार्धक्य आदि विभिन्न अवस्थाओं को प्राप्त होता है। इस दृष्टि से वह अनित्य है। व्यक्ति स्वयं को स्थायी नहीं, राही मानकर चले। धन, संपत्ति आदि नाशवान हैं। इसलिए व्यक्ति को सतत धर्म का अर्जन करना चाहिए। जो केवल भौतिक सुख-सुविधाओं के पीछे दौड़ता है, वह आत्मकल्याण के पथ से च्युत हो जाता है। यदि जीवन में अहिंसा और नैतिकता है तो आत्मकल्याण का पथ प्रशस्त होता है। इसलिए व्यक्ति आत्मकल्याण के प्रति जागरूक बने।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन में जोजावर के बहिर्विहरस्थ मुनि सुबोधकुमारजी और समणी उन्नतप्रज्ञाजी का नामोल्लेख करते हुए उन्हें पवित्र सेवा, साधना और कार्य करने की परोक्ष प्रेरणा प्रदान की। आचार्यवर के प्रवचन के पश्चात् जिलाप्रमुख खुशवीरसिंहजी ने अपने आवास पर पधारने हेतु आचार्यवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा--'आज मेरे लिए अत्यन्त सौभाग्य का दिन है। जिन क्षणों में मेरे घर आचार्यश्री विराजे, वे बीस मिनट मुझे आजीवन याद रहेंगे। मेरे लिए वे क्षण अमूल्य हैं।'

तेयुप सूरत एवं जोजावर तेरापंथ समाज की ओर से पूज्यवर को नशामुक्ति के सैकड़ों फॉर्म समर्पित किए गए। श्री प्रेमराज भंसाली ने अपनी कृति 'पेजेज फ्रोम माइ लाइफ' पूज्य आचार्यवर को उपहृत की।

जोजावर में सौ से अधिक श्रद्धा के परिवार और पचास से अधिक अन्य जैन परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात् आचार्यप्रवर पचास से अधिक जैन घरों में पधारे। अवशिष्ट श्रद्धालुओं के घर दूसरे दिन पूज्य चरणरज से पावन हुए। इस दौरान पूज्य आचार्यवर का तेरापंथ भवन में भी पदार्पण हुआ। पूज्यप्रवर ने भवन के दोनों तल का अवलोकन करने के पश्चात् वहां विराज कर 'प्रभो! यह तेरापंथ महान' गीत का आंशिक संगान किया। रात्रि में श्रद्धालु परिवारों को पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर लोगों ने विविध संकल्प स्वीकार किए।

vkpk;ioj tokgj uokn; fo|ky; e

ff ekpA आज प्रातः परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने जोजावर से विहार करने से पूर्व यहां के लगभग साठ घरों का स्पर्श किया। गांव से लगभग डेढ़ किमी. दूर स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय में पूज्यवर का पदार्पण हुआ। विद्यालय के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य श्री सत्येन्द्रसिंह ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा पूरे देश के प्रायः सभी प्रान्तों के सभी जिलों में एक-एक विद्यालय 'जवाहर नवोदय विद्यालय' के नाम से संचालित किया जाता है। उसके अन्तर्गत चयनित विद्यार्थियों को वहां आवासीय सुविधायुक्त निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। विद्यालय की छात्राओं ने सुमधुर गीत 'आप यहां जो पधारे, धन्य भाग हमारे' प्रस्तुत किया।

प्राचार्य महोदय ने लगभग पांच सौ विद्यार्थियों के हस्ताक्षरयुक्त नशामुक्ति फॉर्म आचार्यवर को समर्पित किए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा--'जीवन के लिए ज्ञान आवश्यक है। ज्ञान-विकास के साथ विद्यार्थियों में सदाचार के संस्कार भी पुष्ट बनें। अहिंसा और नैतिकता के प्रति निष्ठा हो। नशामुक्ति की दिशा में विद्यार्थियों ने जो संकल्प व्यक्त किया है, उस पर वे दृढ़ रहें। छात्र-छात्राओं में विनम्रता व परस्पर सौहार्द और मैत्री का भाव रहे। संस्कारयुक्त ज्ञान अधिक फलदायी होता है। विद्यार्थी ज्ञानात्मक, चारित्रात्मक व भावात्मक विकास करें।' यहां से आचार्यवर ने धनला की ओर विहार किया। मार्ग में गुमानपुरा गांव के लोगों के बीच परमपूज्यवर का संक्षिप्त उद्‌बोधन हुआ, जिससे प्रेरित होकर अनेक व्यक्ति नशामुक्त बने।

èkuyk e ixY;k iT;ioj dk

जोजावर से लगभग नौ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर धनला पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय में हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ। श्री सुरेश जैन ने गांव की ओर से पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने संबोधि के पन्द्रहवें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'मुक्ति की संभावना तभी है, जब सम्यक् ज्ञान, दर्शन व चारित्र का योग हो। केवल श्रुत की आराधना या केवल सम्यक् दर्शन से मुक्ति संभव नहीं है। सम्यक्त्वविहीन आचार मुक्ति के लिए पर्याप्त नहीं है।' अंधे और पंगु के रूपक से अपनी बात को व्याख्यायित करते हुए पूज्यवर ने कहा--'अंधा देखने में समर्थ नहीं और पंगु चलने में समर्थ नहीं। किन्तु आपदा की स्थिति में अंधा पंगु को अपने कंधे पर बैठा ले और पंगु मार्गदर्शक के रूप में उसे रास्ता बताए तो दोनों सुरक्षित निकल सकते हैं। चलने का काम अंधा और मार्ग संसूचन का काम पंगु संपादित करे तो दोनों का काम चल सकता है। ठीक इसी तरह ज्ञान और आचार का योग मोक्ष प्राप्ति में सहायक बन सकता है।'

विद्यार्थियों की ओर उन्मुख होते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यवर ने कहा--'मूर्खता और मूढ़ता--ये दो शब्द हैं। बहुधा दोनों को एक मान लिया जाता है, किन्तु दोनों में पर्याप्त अन्तर है। विद्यालयों में विद्यार्थी को पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त होता है, इससे उसकी मूर्खता दूर होती है। मूर्खता का संबंध ज्ञानावरणीय तथा मूढ़ता का संबंध मोहनीय कर्म के उदय से है। विद्यालयों में मूर्खता मिटाने का प्रयत्न तो होता है। बहुत जरूरी है कि इसके साथ मूढ़ता-मोह के प्रभाव को भी न्यून करने का प्रयास किया जाए।'

आचार्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'गुरुदेव तुलसी आचार्य थे तो प्राध्यापक भी थे। वे साधु-साध्वियों को पढ़ाते, उनसे शुद्ध उच्चारण कराते, शिष्यों को हर तरह से तैयार करते और वात्सल्य देते। उनका प्रसन्न चेहरा, पवित्र आभामंडल सबको आकृष्ट करने वाला था। गुरुदेव तुलसी को मुनिश्री मगनलालजी स्वामी मंत्री मुनि के रूप में प्राप्त हुए। मुझे भी मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं) जैसे प्रौढ़ एवं अनुभवी संत मंत्री मुनि के रूप में प्राप्त हैं। मुनिश्री गुरुदेव तुलसी के प्रारंभ के समय में रहे हैं। आपने कितनी यात्रा की है, संघ चिंतन में कितना योगदान रहा है, कितनी गोष्ठियों में भाग लिया है। गुरुदेव तुलसी ने मुनिश्री के बारे में एक बार फरमाया था--'मुनि सुमेर में विजन है, दृष्टि है।' मगनलालजी स्वामी के बाद लंबे अन्तराल के अनन्तर हमें मंत्री मुनि प्राप्त हुए हैं।'

f[kokMk e Hk0; Lokxr

f„ ekpA आज प्रातः नौ किमी. का विहार कर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर खिंवाड़ा पधारे। पूज्यप्रवर ने गांव के बाहर स्थित श्री महेन्द्रकुमार कांठेड़ व श्री केवलचन्द मांडोत की वाटिका का स्पर्श किया। यहां से एक आकर्षक और प्रलंब जुलूस के साथ आचार्यवर ने गांव में प्रवेश किया। लगभग तीन हजार की

आबादी वाले इस कस्बे के निवासियों का उत्साह और उल्लास अपने चरम पर था। खिंवाड़ा में आचार्यवर का प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में महिला मंडल तथा कन्यामंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। शासनसेवी श्री तेजराज पुनमिया व मूर्तिपूजक समाज के अध्यक्ष श्री मिश्रीमल ढेलड़िया बोहरा ने पूज्यवर के आगमन को खिंवाड़ावासियों का परम सौभाग्य बताया। बालक मानव खांटेड़ ने अपने बालसुलभ विचार व्यक्त करते हुए दीक्षा की भावना व्यक्त की। गंगाशहर सेवाकेन्द्र में चाकरी संपन्न कर एवं आदमपुर मंडी में अपना चतुर्मास संपन्न कर गुरुचरणों में पहुंची क्रमशः साध्वी कंचनकुमारीजी (लाडनूं) एवं साध्वी राकेशकुमारीजी (बायतू) ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त करते हुए अपनी सहयोगिनी साध्वियों के साथ गीत के माध्यम से अपनी प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी। साध्वी राकेशकुमारीजी ने दीक्षा की भावना रखने वाली नौ वर्षीय बालिका चंचल को गुरुदेव के समक्ष प्रस्तुत किया। आचार्यवर से दीक्षित प्रथम बैच की साध्वी वैभवयशाजी ने अपनी जन्मभूमि में अपने आराध्य की अभिवंदना की।

पाली के पूर्व सांसद एवं महावीर इंटरनेशनल के अध्यक्ष श्री पुष्प जैन ने कहा--'मैंने कई विदेश यात्राएं कीं। वहां लोगों से सुना--'आप तो जैन हैं, इसलिए आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ को जानते होंगे।' मैंने अनुभव किया कि तेरापंथ के आचार्यों का नाम उनके अपने कर्तृत्व से देश की सीमा पार कर विदेशों में भी फैला हुआ है। तेरापंथ के साहित्य का मैं पाठक हूं। कह सकता हूं कि वैज्ञानिक प्रस्तुति के साथ मौलिकतापूर्ण साहित्य तेरापंथ ने दिया है। मेरा निवेदन है कि आचार्यवर पाली जिले के गांवों को अधिक से अधिक समय प्रदान करें।'

Hkko'kf) g èke dk lkj

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सुगति उसे सुलभ होती है, जिसकी चेतना प्रशस्त भावों से भावित होती है। अप्रशस्त भाव वालों के लिए सुगति दुर्लभ है। कर्मबंध का संबंध भावों के साथ है। विषयासक्त भाव बंधन की ओर ले जाता है, जबकि विषयविरक्त व साधनाशील भाव मुक्ति की ओर अग्रसर करता है। भावों की अशुद्धि से परिवार में कलह का वातावरण निर्मित हो जाता है। पारिवारिक सदस्यों में विनय व निरहंकार अपेक्षित है। परिवार के सदस्यों में दुराग्रह व अनुशासनहीनता न हो, आवेश नियंत्रित हो तथा अनाग्रह की चेतना पुष्ट हो तो परिवार सुखमय व शांतिमय बनता है।' भावशुद्धि को धर्म का सार बताते हुए आचार्यवर ने कहा--'भावशुद्धि की स्थिति में हमारा कल्याण सुनिश्चित है। पवित्र कार्यों में समय का समुचित नियोजन हो तो भावशुद्धि की दिशा में प्रगति संभव है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'आज हम खिंवाड़ा आए हैं। गुरुदेव तुलसी यहां पधारे थे तो उस समय अच्छा प्रवास हुआ और एक दीक्षा भी यहां संपन्न हुई थी। खिंवाड़ा कांठा का अच्छा क्षेत्र है। तेजराजजी पुनमिया जैसे सुश्रावक का क्षेत्र है। यहां जैन समाज में अनुकूल वातावरण और परस्पर में अच्छा सौहार्द है। साध्वी कंचनकुमारीजी (लाडनूं) गंगाशहर में अमर चाकरी करके आई हैं। वृद्ध व रुग्ण साध्वियों की सेवा करना व उन्हें साता देना विशिष्ट कार्य है। इनके व्याख्यान का भी अच्छा प्रभाव है। साध्वी राकेशकुमारीजी हरियाणा से आई हैं। हमने इनको कई काम सौंपे थे। खिंवाड़ा की साध्वी वैभवयशाजी पहले समणी थी, फिर साध्वी बनी। उन्हें अपनी जन्मभूमि में दर्शन करने का मौका मिल गया। साध्वी काव्यलताजी को अपने कांठा क्षेत्र को संभालने का अवसर मिल गया। सभी साध्वियां अच्छा काम करें।'

कार्यक्रम के पश्चात् पाली जिले के कलेक्टर श्री नीरज के.पवन ने आचार्यवर के दर्शन किए और पाली जिले में समाज सुधार के संदर्भ में चल रहे 'बेटी बचाओ' तथा नशामुक्ति व पर्यावरण विशुद्धि जैसे विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में अवगति दी। रात्रि में मंत्री मुनिश्री के प्रेरक अभिभाषण के पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्यवर का मंगल उद्बोधन हुआ।

_f"kckb dl xko e _f"k i#"k

f… ekpA खिंवाड़ा प्रवास का दूसरा दिन। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर लगभग साढ़े छह किमी. का विहार कर वणदार पधारे। ऋषिबाई सेठिया (धर्मपत्नी-श्री पुखराजजी सेठिया) की विशेष धर्मनिष्ठा व संघनिष्ठा के प्रभाव से सेठिया परिवार ने लगभग साठ वर्ष पूर्व तेरापंथ की श्रद्धा स्वीकार की। परमपूज्य कालूगणी और परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की कृपापात्र ऋषिबाई ने बासठ दिन के अनशन में समाधिमरण का वरण किया। पूना, चेन्नई व बेंगलुरु में प्रवासी जरीवाला सेठिया परिवार के अस्सी सदस्यों में सत्तर लोग पूज्यप्रवर के डेढ़ घंटे के प्रवास का लाभ लेने के लिए अपने मूल गांव वणदार पहुंचे। इस अवसर पर जैन समाज के प्रायः सभी पन्द्रह घर खुले। वणदार पदार्पण पर गांववासियों ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। सभी जैन घरों का स्पर्श करने के बाद पूज्यप्रवर पूना प्रवासी श्री निष्ठाशील कार्यकर्ता सोहनलाल सेठिया के निवास पर पधारे और वहां कुछ क्षण प्रवास किया।

गांव के चौक में आयोजित कार्यक्रम में प्राध्यापक श्री गुमानसिंह राजपुरोहित ने अपने उद्‍गार व्यक्त करते हुए कहा--'इसी चौक पर सन् १६६० में आचार्यश्री तुलसी के सामने मुझे अपने विचार व्यक्त करने का सौभाग्य मिला था। आज उनके पट्‍ट पर विराजमान आचार्यश्री महाश्रमण के सम्मुख बोल रहा हूं। आप गांव-गांव में नैतिकता की जो अलख जगा रहे हैं, उसके आलोक में जनसामान्य को जीवन की सही राह प्राप्त होगी।' श्री अर्जुनसिंह राजपुरोहित ने पूज्यवर के स्वागत में कविता प्रस्तुत की। श्रीमती वीणा सेठिया व अन्य बहनों की गीत प्रस्तुति के बाद श्री सोहनलाल सेठिया ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‍गार व्यक्त किए। स्थानीय विधायक श्री केसाराम चौधरी ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के उद्‍देश्यों की चर्चा करते हुए अनुकंपा की चेतना के जागरण व नशामुक्ति की प्रेरणा दी व ऋषिबाई की श्रद्धा का विशेष उल्लेख किया। इक्कीस वर्ष पूर्व गुरुदेव तुलसी के वणदार पदार्पण की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'मैं उस समय गुरुदेव के साथ था। उस समय एक भाई ने एक घटना सुनाई कि वणदार का एक ग्रामीण अस्वस्थ हो गया। उसे डॉक्टर को दिखाया गया तो डॉक्टर ने इंजेक्शन लगवाने के लिए कहा। उसने सोचा--रोज-रोज खिंवाड़ा जाकर इंजेक्शन लगवाना झमेला है। दवा शरीर में ही तो पहुंचानी है, फिर उसे सुई से लें या शीशी को मुंह से लगाकर पी लें, क्या फर्क पड़ता है? उसने अपने चिंतन को क्रियान्वित कर डाला और सारी दवा, जो कई दिन के लिए थी, एक बार में ही पी गया। परिणामस्वरूप उसका प्राणान्त हो गया। ज्ञान के अभाव में व्यक्ति इस तरह के कार्य भी कर लेता है, इसलिए ज्ञान बहुत जरूरी है।' *(लोगों ने पूज्यवर द्वारा सुनाए गए घटना-प्रसंग पर अपनी सहमति व्यक्त करते हुए उस व्यक्ति का नाम भगाराम देवासी बताया)*

लगभग दस बजे वणदार से विहार कर पूज्य आचार्यप्रवर पुनः खिंवाड़ा पधार गए। इस प्रकार प्रवास में भी लगभग बारह किमी. का परिभ्रमण हो गया। यह आचार्यप्रवर की करुणा और वत्सलता है जो भक्तों की सार-संभाल के लिए आपसे इतना श्रम करवाती है।

efyu Hkkouk l cp

खिंवाड़ा प्रवास के दूसरे दिन प्रातःकालीन मंगल प्रवचन में पूज्य आचार्यवर ने कहा--'जैन वाङ्मय में सोलह भावनाओं का उल्लेख मिलता है। प्रशस्त भावनाओं के साथ कुछ भावनाएं अप्रशस्त भी होती हैं। उनमें एक है किल्विषिकी भावना। हमारे जीवन में ज्ञान का अतिशय महत्त्व है। यह जीवन के लिए प्रकाशकर है, इसलिए ज्ञान का सम्मान करना चाहिए। ज्ञान या बुद्धि क्षयोपशम भाव है। बुद्धि के साथ शुद्धि रहे तो व्यक्ति अच्छा कार्य कर सकता है। शुद्ध बुद्धि कामधेनु सदृश है। ज्ञान व ज्ञानी की आशातना करने से ज्ञानावरणीय कर्म का उपार्जन होता है। ज्ञान व ज्ञानी तथा संघ व धर्म की साधना करने वालों

के प्रति अवर्णवाद बोलना किल्विषिकी भावना है। चरित्र की दृष्टि से कोई भी किसी पर किसी प्रकार का झूठा आरोप न लगाए। मिथ्यारोपण बहुत बड़ा पाप है। किल्विषिकी भावना मलिन भावना है। इससे बचने का प्रयास करें और पवित्र कार्यों में अपने समय का नियोजन करें। कोई भगवान का नाम ले सके या नहीं, पर अपने जीवन में नैतिकता, सदाचार व सचाई को प्राथमिकता दे।' पुलिस अधिकारी श्री प्रसन्नकुमार खमेसरा ने अपने विचार रखे। आचार्य भिक्षु समाधिस्थल संस्थान सिरियारी के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रकुमार सुराणा एवं पाली जिलाप्रमुख श्री खुशवीरसिंह के प्रासंगिक वक्तव्य हुए।

सुदूर दक्षिण की सवा आठ वर्षीय लगभग दस हजार किमी. की प्रलंब यात्रा संपन्न कर मुनि जिनेशकुमारजी ने अपने सहवर्ती संतों के साथ पूज्यप्रवर के दर्शन किए। मुनि परमानंदजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। आचार्यश्री महाप्रज्ञ की अनुज्ञा से मुनि जिनेशकुमारजी ने स्वयं द्वारा दीक्षित मुनि सुबोधकुमारजी को पूज्य आचार्यवर को समर्पित किया। मुनि सुबोधकुमारजी ने दीक्षा के बाद प्रथम बार गुरुदर्शन कर अपनी प्रसन्नता को कविता के माध्यम से व्यक्त किया।

मुनि जिनेशकुमारजी ने अपने भावपूर्ण वक्तव्य में कहा--'हैदराबाद चतुर्मास के बाद लगभग पन्द्रह सौ पचास किमी. की यात्रा परिसंपन्न कर आज गुरुदर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हमारा रोम-रोम उल्लसित है और अपनी प्रसन्नता को अभिव्यक्ति देने में मैं स्वयं को असमर्थ पा रहा हूं। गुरु भाग्य विधाता, त्राता और संकटमोचक होते हैं। २९६२ दिन बाद गुरुचरणों में पहुंचकर अत्यन्त प्रसन्नता और कृतार्थता की अनुभूति हो रही है।'

पूज्य आचार्यवर ने अपने आशीर्वचन में कहा--'मुनि जिनेशकुमारजी को परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने जलगांव से भेजा था। इतनी दूर दो संतों को भेजा और ये चले गए। इसमें इनका साहस था तो हमारा भी साहस था। मुनि जिनेशजी ऐसे युवा संत हैं, जिन्होंने संघ प्रभावना में अपनी शक्ति का सम्यक् नियोजन व प्रयोग किया है। मैं कभी-कभी इन्हें याद करता हूं कि श्रावक समाज की कितनी सार-संभाल और संघीय कार्य कर रहे हैं। शासनश्री मुनि मोहनलालजी 'आमेट' जैसे अनुभवी संत के साथ ये वर्षों तक रहे हैं। गंगाशहर के मुनि परमानंदजी अच्छे संत हैं। इनका काफी अनुकूल योग रहा। मुनि जिनेशजी ने दो दीक्षा दी। एक को संथारे में पार पहुंचा दिया और दूसरे मुनि सुबोध को हमारे पास भेंटस्वरूप लाए हैं। परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण के बाद पहली बार आए हैं। संक्षेप में इतना-सा कहा जा सकता है कि मुनि जिनेशकुमारजी ने दक्षिण भारत की सफलतम यात्रा की है। सभी संत खूब स्वस्थता के साथ काम करें।'

रात्रि में भी प्रवचन, पारिवारिक सेवा व त्याग-संकल्प का क्रम चला। खिंवाड़ा का द्विदिवसीय प्रवास उल्लास व उमंगमय वातावरण में संपन्न हुआ। यहां लगभग ३६४ जैन परिवार हैं, जिनमें तेरापंथी, मूर्तिपूजक जैनों की संख्या लगभग समान है। प्रायः आठ घर खुले रहने वाले इस कस्बे में आचार्यवर के पदार्पण पर सवा तीन सौ घर खुले, जिनमें तेरापंथी परिवारों की संख्या शत-प्रतिशत रही। पूज्यप्रवर ने दो दिन के प्रवास में तीन बार में लगभग साढ़े तीन सौ जैन-अजैन घरों का स्पर्श किया। जिस गली से आचार्यप्रवर निकलते, वह जनसंकुल बन जाती। जयघोषों से गलियां गुंजायमान हो जातीं। एक लंबा काफिला गुरुदेव के पीछे-पीछे सरकता। ठाणा-मुम्बई, सूरत व दक्षिण भारत के विभिन्न क्षेत्रों के प्रवासी खिंवाड़ावासी पूज्यवर को अपने घर-आंगन में पाकर अत्यन्त प्रमुदित थे। पूज्यवर का प्रवास तेरापंथ भवन में और प्रवचन श्री कपूरचन्दजी रतनचन्दजी श्रीश्रीमाल के विशाल भू-खंड में निर्मित भव्य प्रवचन पंडाल में हुआ।

Lefr&I cy

- असाढ़ा निवासी अहमदाबाद प्रवासी श्रीमती लीलादेवी भंसाली (धर्मपत्नी-श्री सुमेरमलजी भंसाली) का पचपन वर्ष की अवस्था में आकस्मिक निधन हो गया। अठाईस वर्ष की उम्र में उन्होंने तपोमय जीवन जीना शुरू किया। सामायिक, प्रवचन श्रवण, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय आदि उनकी दिनचर्या के

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

अंग थे। जैन विद्या भाग-६, पत्राचार परीक्षा तथा तत्त्वज्ञान भाग-४ तक की परीक्षा दी। अठारह वर्षों से बारहव्रतधारी, अठाईस वर्षों से रात्रि भोजन, अठारह वर्षों से सचित्त व पांच वर्षों से जमीकन्द का त्याग रखनेवाली श्राविका थी। एक से बारह तक की लड़ीरूप तप कर चुकी श्राविका लीलादेवी ने बेले, तेले, चोले आदि बडी संख्या में किए। पंचकल्याणक, सिद्धितप व अन्य तप भी संपन्न किए। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में सेवा देने वाले धनराजजी भंसाली के लघु भ्राता की वह पत्नी थी। पूरा भंसाली परिवार संस्कारी है।

- आसीन्द निवासी श्री चांदमलजी बाफना का देहावसान हो गया। स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने अपनी सेवाएं दीं। वे एक धर्मनिष्ठ श्रावक थे।
- लातुर निवासी श्रीमती तारादेवी गटागट का पूर्ण सचेतावस्था में संथारे में स्वर्गवास हो गया। तारादेवी के मन में साधु-साध्वियों के प्रति गहरी श्रद्धा थी।
- रामगढ़ निवासी दिल्ली प्रवासी श्री मांगीलाल लूणिया का सत्तावन वर्ष की उम्र में असाध्य बीमारी में देहावसान हो गया। शाहदरा दिल्ली तेरापंथी सभा के दो बार अध्यक्ष रह चुके श्री लूणिया धर्मनिष्ठ श्रावक थे। उनकी धर्मपत्नी चन्द्रकला लूणिया सूर्यनगर ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका व सेवाभावी श्राविका है। उनके दोनों पुत्र गौरव व सौरभ संस्कारी हैं।

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

११०००/- स्व. श्री रुकमानन्दजी मालू (सुपुत्र-स्व. श्री माणकचन्दजी मालू), स्व. पूनमचन्दजी मालू (सुपुत्र-स्व. श्री रुकमानन्दजी मालू) एवं स्व. कमलसिंहजी मालू (सुपुत्र-स्व. श्री रुकममानन्दजी मालू) श्रीडूंगरगढ़-जयपुर की पुण्यस्मृति में बनेचन्द, पन्नालाल, मदनलाल, जसराज, विनय, विनीत, पुनीत मालू द्वारा प्रदत्त।

२५००/- स्व. श्री चोरूलालजी दूगड़ (फतेहपुर शेखावाटी) के प्रभावक चौविहार संथारे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू निर्मल-लक्ष्मी (कोलकाता), सुबोध-जयश्री (उदयपुर), संजय-चंचल (जयपुर) एवं सुपौत्र धैर्य, वायु दूगड़ द्वारा प्रदत्त।

२१००/- युवकरत्न शासनसेवी स्व. श्री रणजीतमलजी भंडारी (जोधपुर-दिल्ली) की छठीं पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा भंडारी एवं सुपुत्र अशोक, विमल भंडारी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती रतनीदेवी पटावरी (धर्मपत्नी-श्री पुष्पराजजी पटावरी, सरदारशहर-हैदराबाद) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू रतनलाल-मधु, जतनलाल-केतू, दिलीपकुमार-अमिता, सुपौत्र व पौत्रवधू राजेश-चन्द्रा, मयंक, आदित्य, प्रपौत्र रणवीर एवं प्रपौत्री श्रुति पटावरी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण के छापली शुभागमन एवं श्री मांगीलालजी खिमेसरा द्वारा पूज्यप्रवर से सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार करने के उपलक्ष्य में पीयूषकुमार खिमेसरा (छापली) द्वारा प्रदत्त।

i=k 0;ogkj d fy, gekjk irk&&

d'koi lkn pronh] icU/kd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&Jh fHk{k lekf/k LFky lLFkku
ik-flfj;kjh&306027] ft-ikyh ¼jktLFkku½ Qku % 09680055381] 09352404641
fnYyh dk;ky; dk Qku 011&23234641 Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

idk'ku fnukd % 17&3&2012

●

vkn'k lkfgR; l?k] 210] nhun;ky mik/;k; ekx] ub fnYyh&110002 d fy, cPNjkt dBkfr;k VLVh }kjk idkf'kr
rFkk iou fiVl] uohu 'kkgnjk] fnYyh&110032 l efnrA lEikind % **d'koi lkn pronhA**